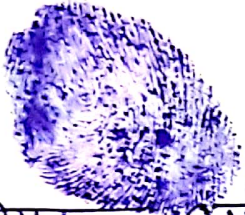


15⁶/₁₇

नि. अ.

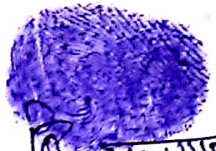


गजराज (विवाही)



नि. अ.

श्रीगजराज (विवाही)



नि. अ. गजराज (विवाही)

Pampy

15⁶/₁₇

आज यह पत्र (वही) पत्रद्वारा, वही भी जोल से
आपका उद्देश्य कि यह वही वही के आ.पत्र उद्देश्य
कि यह कि यह अपने पत्र का जो पत्र
क(ना-यह वही) पत्रद्वारा का आ.पत्र रखा कल
कि यह वही पत्र का पत्र जो पत्र कि यह
जो वही पत्र वही नमक से कम होकर यह
वही वही वही वही वही वही

पत्र

एन वन्दु अधिकारी
गजराज (विवाही)